सरस्वतीस्तोत्रम्

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

वे कुन्द पुष्पों, चन्द्रमा, तुषार की भाँति,
अपने गले में चमकते मोतियों की भाँति धवल हैं,
अपने शुभ्र वस्त्रों के समान कान्तिमती हैं।
श्वेत पद्म पर आसीन, भव्यवीणाधारिणी,
वे ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा
अन्य सभी देवों द्वारा सदा वन्दित हैं।
महामहिमाशालिनी भगवती सरस्वती,
जो हर प्रकार के अज्ञान व जड़ता को दूर करती हैं,
मेरी रक्षा करें।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।